विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 11-01—2021

वर्ग पंचम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

संधि की परिभाषा

दो वर्णों (स्वर या व्यंजन) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

दूसरे अर्थ में- संधि का सामान्य अर्थ है मेल। इसमें दो अक्षर मिलने से तीसरे शब्द रचना होती है,इसी को संधि कहते है ।

उन पदों को मूल रूप में पृथक कर देना संधि विच्छेद है।

जैसे -हिम +आलय =हिमालय (यह संधि है), अत्यधिक = अति + अधिक (यह संधि विच्छेद है)

यथा + उचित =यथोचित

यशः +इच्छा=यशइच्छ

अखि + ईश्वर =अखिलेश्वर

आत्मा + उत्सर्ग =आत्मोत्सर्ग

महा + ऋषि = महर्षि ,

लोक + उक्ति = लोकोक्ति

संधि निरथर्क अक्षरों मिलकर सार्थक शब्द बनती है। संधि में प्रायः शब्द का रूप छोटा हो जाता है। संधि संस्कृत का शब्द है /

आप पढ़ रहे है -

संधि के कितने भेद होते है

वर्णों के आधार पर संधि के तीन भेद है-

(1)स्वर संधि (2) व्यंजन संधि (3) विसर्ग संधि

(1)स्वर संधि :- दो स्वरों से उतपन विकार अथवा रूप -परिवर्तन को स्वर संधि कहते है।

जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी , सूर्य + उदय = सूर्योदय , मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र , कवि + ईश्वर = कवीश्वर , महा + ईश = महेश .

इनके पाँच भेद होते है -

(i)दीर्घ संधि

(ii)गुण संधि

(iii)वृद्धि संधि

(iv)यर्ण संधि